an>

Title : Need to set up of a memorial in the memory of the deceased of Uttarakhand tragedy.

श्री अश्विनी कुमार चौबे (बक्सर) : माननीय सभापति जी, बड़े व्यथित हृदय से आज उत्तराखंड की त्रासदी की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

गत वर्ष 16-17 जून को उत्तराखंड त्रासदी के समय में मैं अपने परिवार के साथ प्राणरक्षार्थ श्री केदारनाथ मंदिर के गर्भगृह में था। मैं उक्त घटना का भुक्तभोगी हूं तथा तीन दिनों तक जीवन और मौत के बीच संघर्ष करता रहा था। उस महाप्रलय में अपने साथ गये 15 जनों में से 7 लोग कालकवलित हो गए तथा बडी संख्या में अनेक लोगों को अपनी इन पथरीली आंखों से जल के तेज प्रवाह में बहते हुए देखा था, जो हृदय विदारक दृश्य जीवनभर अविस्मरणीय रहेगा।

सम्पूर्ण उत्तराखंड के विभिन्न क्षेत्रों में 40 से 50 हजार आदमी मौत के घाट उतर गये लेकिन आज उसके बारे में कोई रोने वाला नहीं है। उक्त त्रासदी को एक वर्ष से भी अधिक समय हो गया किंतु न तो अभी तक उत्तराखंड सरकार द्वारा, ...(व्यवधान) यह महत्वपूर्ण विषय है।

माननीय सभापति : अब समाप्त करिए। एक मिनट में अपनी बात समाप्त करिए।

श्री अश्विनी कुमार चौबे : मैं स्वयं भुक्तभोगी हूं। उस त्रासदी को एक वर्ष से भी अधिक समय हो गया किंतु न तो अभी तक उत्तराखंड सरकार द्वारा कालकवलित लोगों का सही आंकड़ा प्रस्तुत किया गया है और न ही बहुतायत आश्रित परिजनों को राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा घोषित मुआवजा राशि तथा मृत्यु प्रमाण पत्र प्रदान किया गया है जिसकी संख्या देश के विभिन्न राज्यों की हजारों में है। विशेषकर बिहार में बहुतेरे आश्रित परिवारों को न तो मृत्यु प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ है और न ही मुआवजा राशि दी गई है। मंदिर के मुख्य द्वार के पास सामने मृत दो जनों जिनमें से बिहार के वरिष्ठ पत्रकार सुबोध मिश्रा तथा उनकी धर्मपत्नी संगीता मिश्रा का वहां के एस.डी.एम. के समझ शिनाख्त करने के बावजूद भी उनका मृत्यु प्रमाण पत्र अभी तक अप्राप्य है जबकि उत्तराखंड सरकार द्वारा स्वत: स्व.मिश्रा के संबंध में मीडिया के प्रथम विन्हित शव के रूप में दर्शाया गया था।...(व्यवधान) केवल आधा मिनट ...(व्यवधान) मेरा आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि मृतक तीर्थ यात्रियों की स्मृति में नई दिल्ली या हरिद्वार में "नमामि शुद्धावन" की स्थापना की जाए। धन्यवाद।

HON. CHAIRPERSON**:** Nothing will go on record.